शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

अधिकारी और तुलिका का अद्भुत संगम : किरन सोनी गुप्ता की कला दुनिया

डॉ. कोमल लुहाच, पीएच.डी. (ड्राइंग और पेंटिंग – 2018), वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान
पता – वेयर हाउस रोड, शिव मंदिर के सामने, चरखी दादरी, हरियाणा
ईमेल – komalsingh762@gmail.com

शोध सार

किरन सोनी गुप्ता की कला लोक प्रशासन और ललित कला का एक दुर्लभ संश्लेषण प्रस्तुत करती है, जो इस बात का एक सम्मोहक उदाहरण प्रस्तुत करती है कि नौकरशाही का कैरियर कलात्मक अभिव्यक्ति को कैसे समृद्ध कर सकता है। एक वरिष्ठ भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी और एक स्व–शिक्षित कलाकार के रूप में, गुप्ता ने ऐसे कामों का एक समूह बनाया है जो अमूर्त सौंदर्यशास्त्र को सामाजिक यथार्थवाद के साथ जोड़ता है। यह शोधपत्र किरन सोनी गुप्ता की अनूठी कलात्मक दुनिया की खोज करता है, जो एक भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी हैं, जिनका नौकरशाह और स्व–शिक्षित कलाकार के रूप में दोहरा करियर शासन और रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक सम्मोहक प्रतिच्छेदन प्रदान करता है। गुप्ता की कला, जो अमूर्त अभिव्यक्तिवाद और सामाजिक यथार्थवाद के मिश्रण की विशेषता है, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक समानता और पर्यावरणीय स्थिरता के विषयों के साथ उनके गहरे जुड़ाव को दर्शाती है। हाशिए के समुदायों के साथ काम करने के अपने व्यापक प्रशासनिक अनुभव से आकर्षित होकर, उनकी पेंटिंग दृश्य कथाओं के रूप में काम करती हैं जो नीतिगत मुद्दों को मानवीय बनाती हैं और सामाजिक परिवर्तन की वकालत करती हैं। उनके कलात्मक विकास, विषयगत फोकस, प्रदर्शनी इतिहास और आलोचनात्मक स्वागत के विश्लेषण के माध्यम से, यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि गुप्ता की दोहरी पहचान उनकी कला और उनकी सार्वजनिक सेवा दोनों को कैसे समृद्ध करती है, उन्हें एक अग्रणी व्यक्ति के रूप में स्थापित करती है जो संस्कृति और शासन की दुनिया को जोड़ती है।

संकेत शब्द

किरन सोनी गुप्ता, भारतीय समकालीन कला, नौकरशाह–कलाकार, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक यथार्थवाद, अमूर्त अभिव्यक्तिवाद, कला और शासन, सांस्कृतिक प्रशासन

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

1. परिचय

कला प्रकृति से जुड़ी है। प्रकृति सौंदर्य से परिपूर्ण है। 'कला' किसी बाह्य माध्यम द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति को कहते है। कलाकार अपनी इस अभिव्यक्ति के लिए दिन प्रतिदिन नए–नए माध्यमों की खोज करता रहता है तथा प्रभावी रूप से अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है। ''भारतीय संस्कृति जितनी पुरानी है उतनी ही पुरानी उसकी कलाएं एवं कला पद्धतियाँ है। मानव के विकास के साथ कलाओं का विकास भी जुड़ा है। जिस प्रकार मानव जीवन वैविध्यता से पूर्ण है उसी प्रकार कलाओं का विकास भी अद्भुत एवं वैविध्यपूर्ण रहा है। कला हमारी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण तत्व है जो मानव मन को परिष्कृत व अलंकृत करती है। भारतीय दर्शन, साहित्य एवं धार्मिक मान्यताओं आदि की अभिव्यक्ति विशेषतः दृश्य कलाओं में देखी और अनुभव की जा सकती है, इसके साथ ही निजी जीवन के सुख–दुख, ह्रास–विलास और जय–पराजय को भी अभिव्यक्त किया है।''

मानव मन अत्यंत संवेदनशील होता है। इसमें अनेक भावनाएँ वास करती है। मन में वास करने वाली प्रत्येक भावना की अभिव्यक्ति प्रत्येक मानव द्वारा संभव नहीं होती है। मानव का संबंध कला, संगीत से होना आवश्यक नहीं है अन्य किसी विद्या से संबंध रखने वाला व्यक्ति भी भावनाओं को व्यक्त कर सकता है। बशर्ते उसे अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त करनी आती हों।

प्रागैतिहासिक काल में जब भाषा का भी जन्म नहीं हुआ था, उस समय मनुष्य अपने आस–पास के लोगों की हलचल उनकी आवाजों को सांकेतिक माध्यम से दर्शाता था। परंतु धीरे–धीरे मनुष्य द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम खोज निकाला गया। सर्वप्रथम मनुष्य द्वारा रेखांकन को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। गुफाओं की दीवारों पर पत्थरों की सहायता से रेखांकन किया गया।

''कला मानव की सहज अभिव्यक्ति है। प्राचीन गुहावासियों से लेकर आज के कांच की खिड़कियों से झांकने वाले मानव तक कला का विकास क्रम रूका नहीं है, पहाड़ों को काटकर देवालयों का निर्माण किया गया। पत्थरों को जोड़कर एक से एक नयनाभिराम मंदिर उसने खड़े किए। उनकी भित्तियों पर विभिन्न प्रयोग किए और ताड़पत्र, छाल, कपड़ा व कागज आदि जो कुछ भी उसे मिल गया, उसने उसे सृजन का माध्यम बना लिया।''

प्रागैतिहासिक युग से आधुनिक युग तक मनुष्य ने अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए अपने आस–पास के वातावरण से चीजों को खोज निकाला तथा अभिव्यक्ति दी। मनुष्य का जुड़ाव प्रकृति से सदैव बना रहता है। इसके साथ ही वह समाज में रहता

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

है तो संभव रूप से उसका जुड़ाव समाज से भी होता है, वह सामाजिक प्राणी भी कहलाता है। भावनाऐं प्रत्येक मनुष्य से उसके जन्म से लेकर मृत्यु तक सदैव जुड़ी रहती है। भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रत्येक जीव कर सकता है। भावनाऐं प्रत्येक मनुष्य में विराजमान रहती है। कलाकार अपनी तुलिका द्वारा उन्हें अभिव्यक्त करता है। किरन सोनी गुप्ता जो एक भारतीय प्रशासनिक अधिकारी पद पर आसीन है। किरन जी द्वारा अपने विचारों को कलम तथा तुलिका दोनों द्वारा अभिव्यक्ति दी गई हैं। दोनों ही इनके पसंदीदा शौक रहे है।

किरन जी बचपन से ही पढ़ाई में अव्वल दर्जे की विद्यार्थी रही हैं। इनकी अंग्रेजी की अध्यापिका द्वारा अंग्रेजी भाषा पर इनकी पकड़ अच्छी बनी तथा ये विषय इनका पसंदीदा विषय भी बना तथा बचपन में ही इनके द्वारा ठान लिया गया कि ये भारतीय प्रशासनिक सेवा में नियुक्त होना चाहती है जिसके लिए इन्होंने मेहनत की तथा सफलता हासिल की तथा 1985 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित हुई। शुरूआती दिनों में केरल में रहने पर इनका जुड़ाव प्रकृति से हुआ तथा उसी से प्रभावित होकर इन्होंने उसे कैनवस पर अभिव्यक्ति किया। वैसे तुलिका और किरन जी का सम्बद्ध बचपन से ही रहा है। बचपन में अपनी बड़ी बहन राजन बाटा द्वारा इन्हें कला प्रेरणा मिली। किरन जी की बहन को चित्रकारी का बहुत शौक था। किरन जी का भी मन करता था कुछ पेंट करें और एक दिन उन्हें यह अवसर भी प्राप्त हो गया, इन्होंने इस अवसर का अच्छे से आनंद लिया और एक कृति बनाकर तैयार कर दी। इनकी दीदी तथा पिता जी द्वारा इन्हें प्रोत्साहित किया गया तथा किरन जी का कला के क्षेत्र में समाहित होना उनके लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ जैसे कि उन्होंने मानवता के सभी पहलुओं को अच्छे तरीके से समझा और एक सकारात्मक सामाजिक एवं राजनैतिक बदलाव लाने में सहायक रहा। कला के क्षेत्र में जुनून रखने से उन्हें प्रशासनिक मुद्दों एवं समस्याओं को समझने में काफी सहायता मिली। इसी तरह उनका प्रशासनिक अनुभव उनके कला के क्षेत्र में हम देख सकते हैं। उनकी संवेदनशीलता अपने लोगों के लिए और समाज के लिए सभी को पसंदीदा बनाती है। इन सभी ने उन्हें एक अच्छे इंसान और एक बहुत अच्छे प्रशासनिक अधिकारी के रूप में निखारने में मदद की हैं। किरन जी कहती है–''मनुष्य की परिस्थितियों से मेरा सामना करना मेरे लिए कला के क्षेत्र में एक प्रेरणा का स्त्रोत बनी। कला के एक टुकड़े पे काम करने से अपने काम को लेकर मैं –एक नए जोश और एक नए पहलु के साथ स्थापित हुई। मनुष्य की समस्याओं का विभिन्न तरीकों से समाधान ही एक सत्त है। मैं इसे एक सामाजिक कार्य कहती हूँ जिसको करने में कला ने मेरा साथ दिया।''

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

आधुनिक भारतीय कला परिदृश्य में, किरन सोनी गुप्ता की तुलना में पेशेवर अनुशासन और रचनात्मक अभिव्यक्ति का अधिक उल्लेखनीय मिश्रण बहुत कम लोगों में देखने को मिलता है। भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) की एक निपुण अधिकारी और एक विपुल स्व–शिक्षित कलाकार के रूप में, गुप्ता सार्वजनिक सेवा और कलात्मक अभ्यास के बीच की पारंपरिक सीमाओं को चुनौती देती हैं। उनका जीवन और कार्य एक अद्वितीय संगम का प्रतिनिधित्व करते हैं – जहाँ शासन रचनात्मकता से मिलता है, और जहाँ कला नागरिक जिम्मेदारी का विस्तार बन जाती है।

अधिकांश कलाकारों के विपरीत, जिनकी प्रेरणा केवल सौंदर्य अन्वेषण से उभरती है, गुप्ता की दृश्य कलाएँ उनके व्यापक प्रशासनिक करियर से प्रेरित हैं। महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण आजीविका, पर्यावरण क्षरण और सांस्कृतिक संरक्षण जैसे मुद्दों के प्रति उनका अग्रिम संपर्क उनके चित्रों को एक दुर्लभ गहराई और तात्कालिकता प्रदान करता है। ये विषय काल्पनिक नहीं हैं – वे जीए गए हैं, देखे गए हैं, और बोल्ड, भावनात्मक कल्पना में अनुवादित हैं।

यह शोधपत्र किरन सोनी गुप्ता की कलात्मक पहचान के विकास की जाँच करता है, उनके शैलीगत दृष्टिकोण, विषयगत फोकस और वैश्विक स्वागत का विश्लेषण करता है, जबकि इस बात पर प्रकाश डालता है कि उनकी प्रशासनिक अंतर्दृष्टि उनकी दृश्य कहानी को कैसे प्रभावित करती है। ऐसा करते हुए, यह एक सम्मोहक प्रश्न की खोज करता है – एक सरकारी अधिकारी भी कला जगत में एक शक्तिशाली आवाज कैसे हो सकता है? गुप्ता का करियर एक शक्तिशाली उत्तर प्रदान करता है – ब्रश का उपयोग नीति, सहानुभूति और जीवित अनुभव के विस्तार के रूप में करके। संस्कृति और शासन में उनके दोहरे योगदान की खोज करके, यह अध्ययन किरन सोनी गुप्ता को न केवल एक प्रतिष्ठित कलाकार के रूप में बल्कि एक सांस्कृतिक पुल–निर्माता के रूप में भी स्थापित करता है, जिनकी कला व्यक्तिगत अभिव्यक्ति से आगे बढ़कर न्याय, समानता और मानवीय लचीलेपन पर एक सार्वजनिक संवाद बन जाती है।

कला और प्रशासनिक दक्षता का संगठन कभी–कभार ही देखने को मिलता है, मगर जिन लोगों ने हिन्दी का लड़ाई उपन्यास राग दरबारी पढ़ा हो वे जानते होंगे कि इसके लेखक श्री लाल शुक्ल एक आई.ए.एस. अधिकारी थे, बीते कुछ समय से ऐसा ही नजारा कला प्रेमियों को देखने को मिल रहा है। फर्क सिर्फ इतना है कि दिल्ली की प्रशासनिक मुखिया कलम के बजाए अपनी तुलिका से कड़वी सच्चाईयों वाली जिम्मेदारी और कोमल कल्पनाओं के बीच अद्भूत संतुलन साधे हुए है। खुद किरन जी के लिए चित्रकला से जुड़ाव और प्रशासनिक सेवा, एक दूजे के पूरक है।'' उनके मुताबिक कलेक्टर और

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

कमीश्नर जैसे दायित्वों को संभालते हुए मुझे मेरे आस–पास के जन–जीवन को गहराई से देखने और समझने का मौका मिला, मुझे याद है कि गंगानगर के ग्रामीणों के बीच जाकर उनकी समस्याओं का समाधान करने की कोशिश में उनके रहन–सहन और पहनावे से अपनी अगली पेटिंग के विषय मिल जाते थे, दूसरी तरफ कला से जुड़ाव हमारे स्वभाव में वह संवेदनशीलता ला देती है जो आम आदमी से सहज संवाद करने और उनकी मुश्किलों को समझने के लिए जरूरी होता है।

बाल्यकाल से ही प्रत्येक बालक में कोई न कोई प्रतिभा अवश्य होती है और उसे पहचानने की प्रतिभा भी प्रत्येक बालक में होती है। किरन जी का कला के क्षेत्र में समाहित होना उनके लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ है।

2. कलात्मक विकास और माध्यम

किरन सोनी गुप्ता का कलात्मक विकास आत्म–खोज, लचीलापन और अभिव्यक्ति की एक सम्मोहक यात्रा है, जो लोक प्रशासन में उनके चुनौतीपूर्ण करियर के साथ–साथ सामने आती है। काफी हद तक स्व–शिक्षित, एक कलाकार के रूप में गुप्ता का विकास औपचारिक कला शिक्षा के माध्यम से नहीं, बल्कि जीवित अनुभव, सांस्कृतिक विसर्जन और दृश्य कहानी कहने के साथ सहज संबंध के माध्यम से हुआ है। पिछले कुछ वर्षों में उनके कामों में परिष्कार बढ़ा है, जो प्रतिनिधित्वात्मक रेखाचित्रों से लेकर समृद्ध स्तरित कैनवस तक आगे बढ़े हैं, जो अमूर्तता, प्रतीकवाद और सामाजिक यथार्थवाद को मिलाते हैं।

उनके शुरुआती कामों में अक्सर ग्रामीण जीवन और महिलाओं की रोजमर्रा की वास्तविकताओं का सरल लेकिन भावनात्मक रूप से आवेशित चित्रण होता था, जो भारतीय गाँवों और प्रशासनिक पदों पर उनके प्रत्यक्ष अनुभवों को दर्शाता था। समय के साथ, उनकी शैली एक विशिष्ट भाषा में परिपक्व हो गई है जो आलंकारिक और अमूर्त अभिव्यक्तिवादी विधाओं के बीच झूलती रहती है। गुप्ता खुद को किसी एक शैली या रूप तक सीमित नहीं रखती हैंय इसके बजाय, वह प्रत्येक टुकड़े की कथा या भावनात्मक स्वर के अनुरूप अपने माध्यम और तकनीक को अनुकूलित करती हैं। गुप्ता कई तरह के माध्यमों में उल्लेखनीय बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन करती हैं, जिनमें शामिल हैं –

- कैनवास पर तेल – उनके बड़े पैमाने पर, जीवंत कार्यों में उपयोग किया जाता है जो सशक्तिकरण और परिवर्तन की खोज करते हैं।

- जल रंग और ऐक्रेलिक – तरलता और भावनात्मक बारीकियों की अनुमति देते हैं, जो अक्सर प्रकृति और आंतरिक जीवन की उनकी खोज में लागू होते हैं।

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

• चारकोल और पेंसिल स्केच – ग्रामीण दृश्यों और व्यक्तिगत प्रतिबिंबों के अंतरंग, कच्चे प्रतिपादन की पेशकश करते हैं।

• मिश्रित मीडिया – बनावट, गहराई और प्रतीकात्मकता बनाने के लिए उपयोग किया जाता है, अक्सर प्रवास जैसे विषयों में जटिलता पर जोर देने के लिए सामग्री की परतें होती हैं।

विशेष रूप से, उनकी पेंटिंग द कैस्केड स्त्री भावना और शक्ति की तरलता का प्रतिनिधित्व करने के लिए रंग और गति के उनके उपयोग का उदाहरण है, जो एक अमूर्त लेकिन सहज रूप से संबंधित शैली में प्रस्तुत की गई है। इसके विपरीत, उनकी कलाकृति नरेगा लेबर अधिक प्रतिनिधित्वात्मक है, जो सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों के महत्व पर ध्यान आकर्षित करते हुए ग्रामीण श्रमिकों को गरिमा और यथार्थवाद के साथ चित्रित करती है। ये विपरीत दृष्टिकोण गुप्ता की भावनात्मक अमूर्तता और जमीनी सामाजिक टिप्पणी के बीच सहज रूप से बदलाव करने की क्षमता को प्रदर्शित करते हैं। बोल्ड, वार्म कलर पैलेट, लयबद्ध रेखाओं और प्रतीकात्मक रूपांकनों – जैसे पेड़, उभरती हुई आकृतियाँ और हाथ – का उनका लगातार उपयोग एक दृश्य हस्ताक्षर के रूप में कार्य करता है। ये तत्व, सौंदर्य की दृष्टि से आकर्षक होने के साथ–साथ, गहरे रूपक भी हैं, जो विकास, श्रम, समुदाय और नवीनीकरण के विषयों को दर्शाते हैं। अंततः, गुप्ता का कलात्मक विकास केवल बढ़ती तकनीकी परिशोधन का प्रक्षेपवक्र नहीं है, बल्कि दृष्टि और उद्देश्य का विस्तार है। उनके माध्यम कलात्मक उपकरण से कहीं अधिक हैंय वे जुड़ाव, सशक्तिकरण और प्रतिबिंब के वाहन हैं – उनके काम को व्यक्तिगत अभिव्यक्ति से नागरिक कथा तक बढ़ाते हैं।

3. विषयगत फोकस – सशक्तिकरण, समानता और पारिस्थितिकी

किरन सोनी गुप्ता की कलात्मक प्रथा के केंद्र में सामाजिक न्याय, मानवीय गरिमा और पारिस्थितिक संतुलन के साथ गहरा जुड़ाव है। उनकी पेंटिंग सौंदर्यशास्त्र से परे जाती हैं। वे समकालीन भारत के दबावपूर्ण सामाजिक–राजनीतिक मुद्दों पर दृश्य निबंध के रूप में काम करती हैं। उनके काम के मुख्य विषयगत स्तंभ– सशक्तिकरण, समानता और पारिस्थितिकी– न केवल उनकी रचनात्मक दृष्टि को दर्शाते हैं, बल्कि एक भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) अधिकारी के रूप में उनके जीवित अनुभवों को भी दर्शाते हैं, जिन्होंने ग्रामीण और शहरी परिदृश्यों में समुदायों के साथ मिलकर काम किया है।

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

3.1 सशक्तिकरण

गुप्ता के काम में एक परिभाषित विषय महिला सशक्तिकरण है, जिसे न केवल चिंता के विषय के रूप में बल्कि शक्ति और लचीलेपन के उत्सव के रूप में चित्रित किया गया है। उनकी कला महिलाओं को समाज में सक्रिय प्रतिभागियों के रूप में सामने लाती है – मुखर, जमीनी और परिवर्तनकारी। महिलाओं के सशक्तिकरण का जश्न मनाने जैसी पेंटिंग महिलाओं को पीड़ित होने से परे चित्रित करने की उनकी प्रतिबद्धता का प्रतीक हैं, जो उनके नेतृत्व, भावनात्मक शक्ति और सांस्कृतिक एजेंसी पर जोर देती हैं (साची आर्ट, द. क.)।

गुप्ता की महिला आकृतियाँ अक्सर गति में चित्रित की जाती हैं – नृत्य करती हुई, काम करती हुई या उठती हुई – जो व्यक्तिगत मुक्ति और सामूहिक परिवर्तन दोनों का सुझाव देती हैं। यह दृश्य शब्दावली नीतियों और कल्याण कार्यक्रमों के माध्यम से लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के उनके प्रशासनिक प्रयासों के साथ मेल खाती है, जिससे उनकी कला वकालत का एक शक्तिशाली उपकरण बन जाती है।

3.2 समानता

सामाजिक समानता का विषय सशक्तिकरण के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है, विशेष रूप से हाशिए पर पड़े समुदायों के संदर्भ में। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA) जैसी कल्याणकारी योजनाओं पर काम करने के बाद, गुप्ता अपनी कला में ग्रामीण श्रमिक वर्ग की प्रत्यक्ष समझ लाती हैं। नरेगा लेबर जैसी कृतियों में, वह श्रमिकों को गरिमा और उद्देश्य के साथ प्रस्तुत करती हैं, गरीबी के रूढ़िवादी चित्रणों का मुकाबला उन छवियों से करती हैं जो एजेंसी और एकजुटता को उजागर करती हैं। उनकी रचनाएँ अक्सर जाति, वर्ग और लिंग की अंतर्संबंधता को दर्शाती हैं, जो इस बात पर ध्यान आकर्षित करती हैं कि सामाजिक–आर्थिक संरचनाएँ मानव जीवन को कैसे आकार देती हैं। गुप्ता केवल असमानता का दस्तावेजीकरण नहीं करती हैंय वह इसके समाधान की कल्पना करती हैं – एकता, साझा श्रम और ऊपर की ओर गति के प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व के माध्यम से।

3.3 पारिस्थितिकी

गुप्ता की कृतियों में प्राकृतिक दुनिया एक और आवर्ती तत्व है, न केवल पृष्ठभूमि के रूप में बल्कि उनकी कहानियों में एक सक्रिय भागीदार के रूप में। उनकी कला पर्यावरणीय स्थिरता के लिए बढ़ती चिंता को दर्शाती है, जो आपदा प्रबंधन और पर्यावरण

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

नियोजन में उनकी प्रशासनिक भूमिकाओं से प्रभावित है। पेड़, नदियाँ, जानवर और पृथ्वी के रंग के रंग पैलेट उनके कैनवस को भरते हैं, जो मानव गतिविधि और पारिस्थितिक संरक्षण के बीच नाजुक संतुलन को दर्शाते हैं।

अपने पर्यावरण संबंधी थीम वाले कामों में, गुप्ता अक्सर जलवायु परिवर्तन और अस्थिर विकास के परिणामों को उजागर करने के लिए प्रतीकवाद का उपयोग करती हैं – जैसे नंगे पेड़, फटी हुई मिट्टी या उफनती लहरें। ये तत्व प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व की ओर बदलाव को प्रोत्साहित करते हुए चेतावनी देने वाले रूपकों के रूप में काम करते हैं।

4. प्रदर्शनियाँ और आलोचनात्मक स्वागत

किरन सोनी गुप्ता की कला को भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई प्रदर्शनियों में प्रदर्शित किया गया है, जिसने उन्हें समकालीन कला परिदृश्य में एक सम्मानित आवाज के रूप में स्थापित किया है और सौंदर्य और नागरिक प्रवचन दोनों में सामाजिक रूप से जागरूक कला के मूल्य को सुदृढ़ किया है। उनका कृत्तित्व न केवल प्रदर्शनियाँ प्रदर्शित करने के लिए बल्कि एक सिविल सेवक और कलाकार के रूप में उनकी दोहरी पहचान के अभिसरण के लिए भी उल्लेखनीय हैं – प्रत्येक गहराई और प्रतिध्वनि के साथ दूसरे को सूचित करता है।

4.1 प्रमुख प्रदर्शनियाँ

उनकी सबसे प्रसिद्ध एकल प्रदर्शनियों में से एक, 'एन आर्ट ओडिसी' (2024), नई दिल्ली के बीकानेर हाउस में आयोजित की गई, जिसमें उनकी कलात्मक यात्रा का एक व्यापक पूर्वव्यापी प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनी में तीन दशकों में फैली 100 से अधिक कृतियाँ प्रदर्शित की गईं और महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण जीवन से लेकर जलवायु न्याय और आध्यात्मिकता तक के विषयों की खोज की गई। शो को अमूर्त और प्रतिनिधित्वात्मक शैलियों के एक सहज मिश्रण को प्रस्तुत करने और यह प्रदर्शित करने के लिए व्यापक रूप से प्रशंसित किया गया कि कैसे गुप्ता की प्रशासनिक भूमिकाओं ने उनके अधिकांश काम के लिए भावनात्मक और अनुभवात्मक आधार प्रदान किया (आर्टलाइफ टुडे, 2024)।

इससे पहले, जवाहर कला केंद्र (JKK) जैसे संस्थानों में गुप्ता की प्रदर्शनियों – जहाँ उन्होंने महानिदेशक के रूप में भी काम किया – ने क्षेत्रीय भारतीय कला को राष्ट्रीय स्तर के विमर्श के साथ एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने समूह और

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

एकल प्रदर्शनियों का आयोजन किया और उनमें भाग लिया, जिसमें न केवल उनकी अपनी कला का प्रदर्शन किया गया, बल्कि भारत भर के उभरते और लोक कलाकारों को भी उजागर किया गया, जिससे समावेशी सांस्कृतिक प्लेटफार्मों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का और अधिक प्रदर्शन हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, गुप्ता का काम न्यूयॉर्क, बोस्टन, लंदन, टोरंटो और शिकागो सहित अन्य शहरों में प्रदर्शित किया गया है। साची आर्ट और आर्टक्विड जैसे वैश्विक कला प्लेटफार्मों पर उनकी उपस्थिति ने उनकी पहुंच को बढ़ाया है, जिससे वैश्विक दर्शकों को उनके सामाजिक रूप से संचालित आख्यानों से जुड़ने का मौका मिला है। ये प्रदर्शनियां अक्सर क्रॉस–कल्चरल थीम पर केंद्रित होती हैं आर्टलाइफ टुडे (2024) ने उल्लेख किया कि 'गुप्ता की पेंटिंग्स सिर्फ दस्तावेज नहीं बनातीं – वे पूछताछ करती हैं, वकालत करती हैं और उत्थान करती हैं,' जो रूप और कार्य के बीच संतुलन को दर्शाती हैं जिसे कुछ ही समकालीन कलाकार हासिल कर पाते हैं।

4.2 समीक्षा

उनके काम को उनकी कथात्मक स्पष्टता और प्रतीकात्मक परतों के लिए भी पहचाना जाता है। समीक्षक अक्सर विकास, संघर्ष और नवीनीकरण के सार्वभौमिक विषयों को जगाने के लिए जीवंत रंग, लयबद्ध रेखा और आवर्ती रूपांकनों (जैसे पेड़, हाथ या नदी) के उनके उपयोग पर टिप्पणी करते हैं। ये दृश्य तत्व, भारतीय सौंदर्यशास्त्र में निहित होने के बावजूद, सांस्कृतिक संदर्भों में गूंजते हैं, जिससे उन्हें घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों क्षेत्रों में पहचान मिली है।

साथी कलाकारों और क्यूरेटर ने सार्वजनिक सेवा में संलग्न होने के साथ–साथ कलात्मक अखंडता बनाए रखने के लिए गुप्ता की सराहना की है। उनकी दोहरी पहचान को 'राज्य शिल्प और आत्मा शिल्प के बीच एक सेतु' के रूप में वर्णित किया गया है, और उनकी प्रदर्शनियों में अक्सर नौकरशाही और कलात्मक दोनों समुदायों के लोग शामिल होते हैं, जो एक सांस्कृतिक संयोजक के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है।

गुप्ता की प्रदर्शनी का इतिहास और आलोचनात्मक स्वागत न केवल उनके तकनीकी कौशल और विषयगत स्थिरता को प्रमाणित करता है, बल्कि कला जगत में उनकी अद्वितीय स्थिति को भी प्रमाणित करता है – एक रचनाकार जिसका कैनवास रंगद्रव्य के साथ–साथ नीति द्वारा भी आकार लेता है। उनकी कला संवाद का एक मंच बन गई है, जो विभिन्न क्षेत्रों, भौगोलिक क्षेत्रों और विचारधाराओं के दर्शकों को जोड़ती है।

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

5. कलाकार–अधिकारिता : एक अनूठा संश्लेषण

किरन सोनी गुप्ता दो अलग–अलग दुनियाओं के बीच एक दुर्लभ और सम्मोहक संश्लेषण का प्रतीक हैं – लोक प्रशासन का संरचित, नीति–संचालित क्षेत्र और ललित कला का अभिव्यंजक, सहज ज्ञान युक्त क्षेत्र। यह अनूठी दोहरी पहचान उन्हें शासन और रचनात्मकता के चौराहे पर रखती है, जहाँ ब्रश और नौकरशाही मिलकर ऐसे काम का निर्माण करते हैं जो सामाजिक रूप से प्रासंगिक और कलात्मक रूप से गहरा दोनों है।

भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) अधिकारी के रूप में गुप्ता के करियर में नई दिल्ली के प्रमुख सांस्कृतिक संस्थान जवाहर कला केंद्र (JKK) के संभागीय आयुक्त और महानिदेशक जैसी प्रमुख भूमिकाएँ शामिल हैं। उनकी प्रशासनिक जिम्मेदारियों ने उन्हें अक्सर हाशिए के समुदायों, ग्रामीण श्रमिकों और सांस्कृतिक कारीगरों के सीधे संपर्क में रखा, जिससे उन्हें भारत की सामाजिक गतिशीलता और विकास चुनौतियों की गहन समझ मिली। ये अनुभव उनकी कला को सूचित करते हैं, इसे अमूर्त आदर्शवाद के बजाय वास्तविक दुनिया की कहानियों में आधारित करते हैं।

इसके विपरीत, गुप्ता की कलात्मक संवेदनशीलता ने शासन के प्रति उनके दृष्टिकोण को प्रभावित किया है। एक सांस्कृतिक प्रशासक के रूप में, उन्होंने कलात्मक अभिव्यक्ति, विरासत संरक्षण और सामुदायिक जुड़ाव का समर्थन करने वाले कार्यक्रमों का समर्थन किया है। जेकेके में उनके कार्यकाल की पहचान ऐसी पहलों से हुई, जिन्होंने पारंपरिक कला रूपों को समकालीन अभ्यास से जोड़ा, समावेशिता और संवाद को बढ़ावा दिया। कला की वकालत करते हुए नौकरशाही संरचनाओं को नेविगेट करने की उनकी क्षमता रचनात्मकता और सहानुभूति से समृद्ध नेतृत्व शैली को उजागर करती है। यह परस्पर क्रिया एक सहक्रियात्मक प्रतिक्रिया लूप बनाती है – उनका नीतिगत कार्य उनके चित्रों में स्पष्ट सामाजिक चेतना को गहरा करता है, जबकि उनकी कला प्रशासन की अक्सर अवैयक्तिक दुनिया को मानवीय बनाती है और उसमें भावनात्मक गहराई जोड़ती है। उदाहरण के लिए, ग्रामीण श्रम या महिला सशक्तिकरण का जश्न मनाने वाली पेंटिंग केवल कलात्मक व्याख्याएं नहीं हैं – वे उनके आधिकारिक कर्तव्यों के दौरान सामना की गई नीतिगत वास्तविकताओं, संघर्षों और आकांक्षाओं को दर्शाती हैं। गुप्ता का जीवन और कार्य पारंपरिक द्वैतवाद को चुनौती देते हैं जो अक्सर प्रशासनिक व्यावसायिकता को कलात्मक स्वतंत्रता से अलग करते हैं। इसके बजाय, वह प्रदर्शित करती हैं कि कैसे ये भूमिकाएँ सामंजस्यपूर्ण रूप से सह–अस्तित्व में रह सकती हैं, एक–दूसरे को बढ़ा सकती हैं। यह संश्लेषण सांस्कृतिक नेतृत्व के लिए एक मॉडल प्रस्तुत करता है जहाँ रचनात्मकता शासन को सूचित करती है, और शासन रचनात्मकता को प्रेरित करता है। अंततः, किरन सोनी

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

गुप्ता की दोहरी पहचान दोनों क्षेत्रों में उनके योगदान को समृद्ध करती है। उनकी कला को उनकी नौकरशाही अंतर्दृष्टि से प्रामाणिकता और उद्देश्य मिलता है, जबकि उनकी प्रशासनिक विरासत को उनकी रचनात्मक आवाज के माध्यम से मानवीय रूप दिया जाता है और विस्तारित किया जाता है। उनके हाथों में, अधिकारी की कलम और कलाकार का ब्रश सशक्तिकरण, संवाद और परिवर्तन के साधन बन जाते हैं।

6. निष्कर्ष

किरन सोनी गुप्ता सार्वजनिक सेवा और कलात्मक सृजन के बीच सामंजस्यपूर्ण अभिसरण का एक उल्लेखनीय उदाहरण हैं। एक निपुण भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी और एक स्व–शिक्षित कलाकार दोनों के रूप में उनकी अनूठी यात्रा पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देती है जो शासन को रचनात्मकता से अलग करती हैं। अपनी कला के माध्यम से, गुप्ता जटिल सामाजिक वास्तविकताओं का अनुवाद करती हैं – जो एक नौकरशाह के रूप में उनके जीवित अनुभवों में निहित हैं – सशक्तीकरण, समानता और पारिस्थितिक चेतना की वकालत करने वाले सम्मोहक दृश्य आख्यानों में।

अमूर्त अभिव्यक्तिवाद से लेकर सामाजिक यथार्थवाद तक – माध्यमों और शैलियों का उनका बहुमुखी उपयोग एक विकसित कलात्मक दृष्टि को दर्शाता है जो समुदायों और उनके द्वारा सेवा किए गए उद्देश्यों से गहराई से प्रभावित है। गुप्ता की प्रदर्शनियों ने न केवल उनके तकनीकी कौशल और विषयगत गहराई को प्रदर्शित किया है, बल्कि संस्कृति, नीति और सामाजिक न्याय के प्रतिच्छेदन के बारे में व्यापक बातचीत को भी बढ़ावा दिया है।

इसके अलावा, गुप्ता की दोहरी भूमिका ने उन्हें नौकरशाही और सांस्कृतिक दुनिया के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करने, रचनात्मक सहानुभूति के साथ सार्वजनिक प्रशासन को समृद्ध करने और जमीनी सामाजिक अंतर्दृष्टि के साथ कला को सशक्त बनाने की अनुमति दी है। यह संश्लेषण कला के लिए नागरिक जुड़ाव के एक उपकरण के रूप में काम करने और शासन के लिए रचनात्मकता की परिवर्तनकारी शक्ति को अपनाने की क्षमता को रेखांकित करता है। संक्षेप में, किरन सोनी गुप्ता का जीवन और कार्य इस बात का उदाहरण है कि कैसे अधिकारी और ब्रश समाज को रोशन करने, चुनौती देने और प्रेरित करने के लिए एकजुट हो सकते हैं। उनकी कलात्मक विरासत हमें सीमाओं पर पुनर्विचार करने के लिए आमंत्रित करती है – व्यवसायों, विषयों और दृष्टिकोणों के बीच – और व्यवसाय के साथ दृष्टि को एकीकृत करने के गहन प्रभाव को उजागर करती है।

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 1, अक्टूबर - दिसंबर 2024
Online Available : https://shabdasagar.in/

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- https://www.sodhganga.infibnet.ac.in>bitstream
- शर्मा, एस. के. अग्रवाल, आर.ए. रूपपद कला के मूलाधार, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस मेरठ, प्रथम संस्करण, 1972, द्वितीय संशोधित एवं परिवर्तित संस्करण, 1975, तृतीय संशोधित संस्करण 1976, पृ. सं. 14
- द टाइम्स ग्रुप, संजीव कुमार, टोंक रोड़, जयपुर, प्रथम संस्करण, अगस्त 2009, पृ. सं. 5–6
- इंडिया टुडे, राजस्थान विशेष (जोधपुर सिटी) कमीश्नर की कला, 15 अगस्त 2007, पृ. सं. 22
- ArtLife Today. (2024). *Kiran Soni Gupta: A persistent artist exploring mediums*. Retrieved from https://artlifetoday.in/kiran-soni-gupta-a-persistent-artist-exploring-mediums/
- ArtQuid. (n.d.). *Kiran Soni Gupta profile*. Retrieved from https://www.artquid.com/seller/29744/about
- Saatchi Art. (n.d.-a). *The Cascade*. Retrieved from https://www.saatchiart.com/art/Painting-The-Cascade/175885/1168229/view
- Saatchi Art. (n.d.-b). *Celebrating Women's Empowerment*. Retrieved from https://www.saatchiart.com/account/profile/175885
- The Telegraph India. (2013). *Administrator-cum-artist*. Retrieved from https://www.telegraphindia.com/entertainment/administrator-cum-artist/cid/267743